रात्रीक्लास 12-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

आगे नही समझते थे अकासुर, बकासुर क्या होते हैं। अभी समझते हैं देखनेमें तो जेन्टल मैन है। आगे समझते थे और कोई किसम के मनुष्य होंगे। चित्र भी ऐसे 2 दिखाते थे। परन्तु ऐसी बात है नहीं। यह भी ड्रामा का खेल है। व्यास ने क्या2 बैठ लिखा है।

(बनारस में विद्वत मंडली के विद्वान आचार्य म्युज़ियम का उद्घाटन करने आये थे। वह सारा उन्हों का भाषण आद टेप में सुन रहे हैं:-) यह सिर्फ इतना ही समझते हैं भगवान को पाने लिए इन्हों ने भी अच्छा रास्ता निकाला है। जैसे भगवान प्राप्ती के लिए सतसंग आद करते, वेद-शास्त्र पढ़ते हैं वैसे यह भी इन्हों ने यह रास्ता लिया है। बाकी यह कुछ नहीं समझा है। भगवान इन्हों को पढ़ाते हैं। सिर्फ अच्छा काम करते हैं पवित्रता है, और भगवानसे मिलाते हैं। इतने सतसंग आद होते हैं भगवान के लिए प्राप्ती के लिए ही करते हैं। वेद-शास्त्र आद पढ़ते हैं। बाकी तुम बच्चों को भगवान पढ़ाते हैं यह जरा भी बुधि में नहीं बैठा। समझते हैं इन देवियों ने अच्छा रास्ता निकाला है। बहुत अच्छी भक्तिन है। जिन से उद्घाटन कराया जाता है वह अपने को बहुत ही ऊंच समझते हैं। बाबूजी ने भी इन पंडितों आद की पूंछ पकड़ा है। बाकी उनकी बुधि में कुछ बैठा थोड़े ही हैं। सिर्फ धन्यवाद दिया। जैसे और को बुलाते हैं भाषण करते हैं। यह तो कोई नई बात नहीं। सेठ को यह तो पता नहीं है इन्हों को बाप पढ़ाते हैं। भल समझते हैं कोई महान पुरुष है जाकर मिलें। बाबा ने लिख दिया है पहले तो नाम भराकर भेजो तो फिर उन से बात कर सकें। समझाया जावेगा पहले तो उनको पूरा परिचय दो। परिचय बिगर यहां आकर क्या करेंगे। बाप को जानते ही नहीं तो बाप उनको जमा कहां करेंगे। भक्त ही हैं। आगे चल कर कुछ समझते तो प्रजा में आ सकते हैं। अभी तो कुछ समझा नहीं है। शिव बाबा है उन से मिल सकते हैं यह निश्चय हो तब मिल सके। नहीं तो फल्टू है। पहचान है नहीं तो क्या करेंगे। देने का ही नहीं तो ये लेंगे ही क्यों। गरीब एक रुपया देते हैं, शाहुकार 100 देते हैं रुपयुल अहो जाता है। वह लोग कब भी याद की यात्रा में यथार्थ रीति रह न सकें। ऐसी अवस्था वालों से बाप क्या मिलेंगे। जो पहचान लेते हैं उनको कुछ मिल सकते हैं। आत्माभिमानी बन न सकें। यहां तो बात ही अलग है। वह बात ऐसी नहीं है। पहले2 सतोप्रधान दुनिया थी। अभी तमोप्रधान है। फिर सतोप्रधान कैसे बने जो मुक्तिधाम में जा सकें। पतित से पावन कैसे बने। पहले तो यह लक्ष देना है। प्रेरणा की बात नहीं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो जंक निकल जावेगा। इन में से कोई फूल निकले हो सकता है। ख़याल आए फिर एक दो बारी समझाना चाहिए। तब ही समझें कि तीर लगा है। देवता धर्म के हैं। उन्हों ने भक्ति अच्छी की है। कोई न आया तो समझो फल्टू। इससे तो और ही अनपढ़े को मंगाते तो बहुत है। भल कोई को अच्छा लगता है पर लक्ष को पकड़ा नहीं है। बाबा ने लिखा था विद्वान मंडली वालों को पकड़ने कोशिश करो। परन्तु वह समय नहीं आया है। मैं नहीं समझता हूं कोई एक भी आवेंगे। फिर भी समझते हैं मातेश्वरी ने भगवानसे मिलने की अच्छी युक्ति निकाली है। बाबा कहेंगे न से ठीक है। बात एक को भी नहीं समझ में आया। इन्हों को सिखलाने वाला है। हां कोई आदेफुड समझे तब कहें। फिरसे सुना है कब न कब आवाज़ निकलेगा। तुम जानते हो ड्रामा चलता रहता है। जो हुआ ड्रामा अनुसार। नई बात नहीं होती। जो एक्टिविटी चल रही है नथींग न्यु। सारी दुनिया में जो कुछ चल रहा है बुधि से समझते हैं क्या हो रहा है। जो कुछ हुआ नई बात नहीं। रीपीट होता रहता है। तुम सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानने वाले हो। कोई तकलीफ नहीं। जो किया है सो करते हैं। बाप कोई से लेवे न लेवे उनके हाथ में हैं। भल सेन्टर आद खुलते है पैसे काम आते हैं। प्रभाव निकल जावेगा फिर पैसे क्या करेंगे। मूल बात है पतित से पावन बनना। वह तो बड़ा मुश्किल है। इतना जल्दी कैसे कर सकेंगे। बहुत2 पुरुषार्थ चाहिए। रात-दिन इसमें लग जाये, हमको तो बच्चे बाप को याद करना है ऐसा कोई का पार्ट देखनी है ड्रामा में। समझे पहले तो हम बाप से वर्सा तो ले लेवें। तो फिर एकदम लग पड़ेंगे। हम आत्मा है पहले तो यह पक्का चाहिए। ऐसा कोई निकले तब ही दौड़ी पहने सके तीखी। अच्छा गुडनाईट।